



# INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

## मनुष्य जाति के जीवन में अहिंसा का व्यापक प्रभाव एक विश्लेषण

अजय कुमार

विषय—इतिहास

जय प्रकाश विश्वविद्यालय,

छपरा

चार्ल्स डार्विन ने अपनी पुस्तक 'द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' में स्पष्ट किया है कि मनुष्य का विकास बन्दरों से वनमानुष में और फिर मनुष्य में हुआ। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक अहिंसा और हिंसा दोनों एक साथ मानव जीवन के साथ जुड़े हुये हैं। मनुष्य जब पहाड़ों की गुफाओं और जंगलों में रहता था, तो उसे जंगली हिंसक जानवरों से बचने के लिये पत्थर और हड्डियों के औजारों का प्रयोग करता था। उस समय भोजन के लिये छीना-झपटी नहीं थी। उसे किसी तरह अपना पेट भरने के लिये उपाय करना पड़ता था।

भारतीय प्राचीन धारणाओं के अनुसार मानव जीवन के युग को चार भागों में बांटा गया—

1. सतयुग या कृत युग
2. द्वापर
3. त्रेता
4. कलियुग

जिसे सतयुग कहा जाता है, वह वास्तव में जनयुग था। उस समय खानेवाले कम थे, इसलिए भोजन के लिए हिंसा नहीं करते थे। उस समय करतल भीक्षा तरुतल वास लोग शिकार और जंगली कंदमूल और फल खाकर गुफाओं और वृक्ष के नीचे सो जाते थे। आवश्यकताएं सीमित थी, इसलिए भोजन के सिवा और किसी चीज के लिये संघर्ष नहीं होता था, इसलिए उस समय हिंसा का स्थान मानव और जंगली जानवरों के ही बीच था। ऋग्वैदिक काल में भी ऋषि (यहां ऋषि का मतलब कवि होता है, साधु और संन्यासी नहीं) जो ऋचाओं की रचना करते थे, वे ही ऋषि कहलाते थे। उस समय हिंसा ने भी अपना स्थान ले लिया था, कहा जाता था कि— वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति उस युग में मांस भक्षण का प्रचलन हुआ, लेकिन उसे हिंसा नहीं माना जाता था।

मानव सभ्यता के विकास के क्रम में सामंती समाज में भी अहिंसा था, लेकिन व्यक्तिगत संपत्ति एवं दास प्रथा के चलते समाज में हिंसा का प्रादुर्भाव हुआ। बाईबिल में भी अहिंसा की चर्चा की गई है। ईसा मसीह को जब सूली पर लटकाया गया तो, उन्होंने कहा था कि हे प्रभु इन लोगों (फांसी देनेवालों) को माफ कर दिया जाय, क्योंकि ये नहीं जानते हैं कि ये क्या कर रहे हैं ?

भारत में छठी शताब्दी ई० पूर्व बौद्ध और जैन धर्म के उपदेशों में अहिंसा को ही सबसे बड़ा धर्म बताया गया है। महात्मा बुद्ध ने शारीरिक और वैचारिक हिंसा को भी उस समय भारतीय समाज में छुआछुत, जात-पात और ऊंच-नीच को भेदभाव को भी हिंसा का जनक माना है। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर ने तो यहां तक जोर दिया कि रात में खाना बनाते समय दीपक की लौ में कीड़े-मकोड़े जलते हैं, इसलिए दिन में ही खाना बनाना अहिंसा के लिये जरूरी है। खेती-बारी में कीड़े-मकोड़े भी मरते हैं या कीटनाशक को प्रयोग आधुनिक काल में किया जाता है, जिसे हिंसा कहना मानव के लिये उचित नहीं है।

आज भी जैनियों के दो सम्प्रदायों दिग्म्बर और श्वेताम्बर में से एक नाक पर कपड़ा बांधकर खाना बनाते होंगे। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हिंसा पसंद नहीं करते थे। एक किंवदंति है कि मोहम्मद साहब जिस रास्ते से जाया करते थे, उसी रास्ते में एक बुढ़िया रहा करती थी, जो रोज उन्हें गालियां दिया करती थी। चार-पांच दिनों तक वे बुढ़िया के पास गये, बुढ़िया बीमार थी, मोहम्मद साहब को देखते ही बुढ़िया रो पड़ी और उनके पैरों पर गिर गई। बुढ़िया ने कहा बेटा मैंने तुम्हें गाली देकर बहुत बड़ा हिंसा और पाप किया है, तुम मुझे क्षमा कर दो। इससे यह सिद्ध होता है कि मोहम्मद साहब अहिंसा के पुजारी थे।

भारत में मुसलमानों के आक्रमण के समय बहुत ज्यादा रक्तपात हुआ। यह रक्तपात धन-दौलत लूटने और सत्ता पाने के लिये हुआ। उस समय भी मुस्लिम धर्म सूफी मत वालों ने अहिंसा पर बहुत ज्यादा बल दिया। भारत में 1600 ई० में ईस्ट इंडिया कंपनी यहां व्यापार करने आई और कूटनीति के सहारे भारत पर कब्जा कर लिया। हिंसा के द्वारा उन्होंने भारतीय शासकों को पराजित किया। कहीं-कहीं उन्होंने देशी राजाओं को अपने चाल में फंसाकर सत्ता हथिया लिया।

अंग्रेजों की सत्ता को हटाने के लिये महात्मा गांधी ने 1917 ई० में बिहार के चम्पारण में अहिंसक विरोध किया, जिसका नाम उन्होंने 'सत्याग्रह' दिया। महात्मा गांधी, टॉल्स्टाय और रस्किन से प्रभावित थे। अहिंसक आंदोलन पूरे देश के लोगों के दिमाग पर काफी असरकारक साबित हुई। इस अहिंसक क्रांति का प्रभाव दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला पर भी पड़ा। चूंकि गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में दादा एण्ड अब्दुल्ला के मुकदमे की पैरवी करने गये थे। उन्होंने देखा कि वहां श्वेत और अश्वेत या गोरे-काले के बीच गहरा मतभेद था। काले लोगों की संख्या गोरे लोगों की अपेक्षा अधिक थी। लगभग एक चौथाई गोरे थे और तीन चौथाई काले थे। गोरों का शासन था, वे काले लोगों को रंग के आधार पर जानवर से भी बदतर समझते थे। गांधीजी को भी रेलगाड़ी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार दिया गया था, वह इसलिए कि वे काले थे। वहां भी उन्होंने गोरों के खिलाफ आवाज उठायी। यह आवाज सत्याग्रह के रूप में शुरू हुई। इसका असर यह हुआ कि नेल्सन-मंडेला ने भी गांधीजी के बताये रास्ते पर चलकर दक्षिण अफ्रीका में गोरों के कुशासन, जुल्म और अत्याचार के खिलाफ नारा बुलंद किया तथा दक्षिण अफ्रीका के लोगों को गोरों के खिलाफ गोलबंद किया, जिसका नतीजा हुआ कि 27 वर्षों तक मण्डेला को जेल में सजा काटने के बाद दक्षिण अफ्रीका में श्वेतों और अश्वेतों के साथ मिलकर सरकार का गठन करना पड़ा। आज दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद वाली हिंसा समाप्त हो गई और दक्षिण अफ्रीका में अहिंसक सत्ता की सरकार बनी, जिसमें दोनों आपस में मिलकर शासन करते हैं और उनके बीच शांति कायम है।

महात्मा गांधी अपनी पुस्तक सत्य के साथ मेरा प्रयोग या इसे उनकी आत्मकथा कह सकते हैं में लिखा है कि किशोरावस्था में अपने साथियों के साथ दो-चार बार मांसाहारी भी बने थे, लेकिन जीवन भर वे शाकाहारी जीवन जीते रहे। उनका कहना था कि शाकाहारी जीवन अहिंसक होता है और मांसाहारी जीवन हिंसक होता है। जीवनपर्यन्त गांधीजी इसका पालन करते रहे। वे प्रतिदिन सुबह में ईश्वर की प्रार्थना करते थे कि मुझसे कोई हिंसा न हो। उनके जीवन में नरसिंह मेहता की ये पक्तियां कि तेने वैष्णव मत जानो रे जो पीर-पराई जाने ना अर्थात् जो दूसरे के दुःख को नहीं जानता है, उसे ईश्वर भक्त मत

समझिएकाफी प्रेरणादायक है।

विगत दो विश्व महायुद्धों का इतिहास इसका प्रमाण है कि विश्व में करोड़ों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। धन-जन की अपार क्षति ने दुनिया को दहला दिया। आज दुनिया के शक्तिशाली देश एवं उनके सहयोगी कमजोर देश भी युद्ध करने के उन्माद में होश खो रहे हैं। आज पूरे विश्व में हथियारों की होड़ लगी है, एक देश दूसरे देश को हथियारों का प्रदर्शनी करके डरा रहा है, हो सकता है कि इस

हिंसा की प्रवृत्ति के चलते कहीं तृतीय विश्वयुद्ध न छिड़ न जाये और मनुष्य जाति का विनाश हो जाये। अतः मनुष्य जाति को विनाश से बचाने के लिये आज बुद्ध, महावीर, गांधी, नेल्सन मंडेला,

अब्राहम लिंकन, टॉल्स्टाय के रास्ते पर चलने की जरूरत है, तभी विश्व का कल्याण हो सकता है। अहिंसा के बल पर ही हम सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की कल्पना कर सकते हैं। अहिंसा ही एक हथियार है, जो मनुष्य में प्रेम, भाईचारा, शांति, समानता, सहानुभूति और स्वतंत्रता की भावना पैदा कर उसे शांतिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत करने के लिये प्रेरित कर सकता है।

संदर्भ सूची—

मानव समाज—महापंडित राहुल सांकृत्यायन

मेरी आत्मकथा—महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का समाज दर्शन— महादेव प्रसाद

